AKSHARASURYA
Peer-Reviewed, Multi Lingual E-Journal
Volume – 02, Issue – 01, January 2023.

'सीता पुनि बोली' में स्त्री प्रतिरोध के स्वर

डॉ. सुप्रिया पी,
सहायक आचार्य,
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग,
केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय,
तेजस्विनी हिल्स, पोस्ट पेरिया,
कासरगोड, केरल - 671320,

आधुनिक काल में विविध साहित्यकारों ने मिथकीय नारी पात्रों के द्वारा पौराणिक काल की नारी की स्थिति और उनके मानसिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है, जैसे - सीता, ऊर्मिला, द्रौपदी, यशोधरा, गाँधारी, अहिल्या, कुंती, मंडोदरी। नागार्जुन की कविता 'भूमिजा' में सीता, मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' में ऊर्मिला और 'यशोधरा' काव्य में यशोधरा, नरेंद्र शर्मा के खंड काव्य 'द्रौपदी' में द्रौपदी, नरेंद्र कोहली के 'महासमर' उपन्यास में द्रौपदी और गाँधारी, 'दीक्षा' उपन्यास में अहिल्या विशेष रूप से चर्चित रहें।

गोस्वामी तुलसीदास का 'रामचरितमानस' हिन्दी भाषा का ऐसा महान काव्य है जिसने परवर्ती साहित्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। मानस की कथा में नारी पात्रों का एक विशिष्ट स्थान हैं। सीता, कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा, मंदोदरी, अहिल्या, सुनयना, मंथरा, सुलोचना आदि नारी पात्रों के समावेश से नारी के चरित्र की विशेषताओं को उजागर किया हैं। मानस की सीता का स्थान विश्व की पतिवृता स्त्रियों मे सर्वोच्च है। तुलसीदास ने उन्हें आदि शक्ति माना है।

बाम भाग सोभित अनुकूला।
आदि सक्ति छविनिधि जगमूला ।।

मानस की सीता में तुलसीदास ने श्रेष्ठ पतिव्रत, त्याग, शील, क्षमा, धर्मपरायणता, सेवा, सदाचार, साहस आदि गुणों का समावेश किया है। आधुनिक रचनाकारों ने नारी जागरण के उद्देश्य से सीता पर केंद्रित कई रचनाएँ काव्य और कथा साहित्य में प्रभूत मात्रा में प्रस्तुत किया हैं। सीता के निर्वासन, सीता के जीवन के संघर्ष और चुनौतियों का चित्रण कर इन रचनाओं ने सीता को युग चेतना के साथ प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग में सीता को मनोवैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए सीता-परित्याग प्रसंग को स्वीकार करते हुए आधुनिक नारी की विडंबना का चित्रण किया गया है।

आधुनिक महिला उपन्यासकारों में मृदुला सिन्हा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। एक जागरूक लेखिका बतौर उन्होंने महिलाओं की पारंपरिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया और इन समस्याओं का समाधान साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। मृदुला सिन्हा द्वारा आत्मकथ्य शैली में लिखा गया उपन्यास है 'सीता पुनि बोली'। सीता का मिथक एक ओर वर्तमान के लिए एक समानांतर पाठ रचता है तो दूसरी ओर सीता की कथा के माध्यम से स्त्री-विमर्श के कई मुद्दों पर विचार रखता है। सीता के तेजस्वी और शौर्यपूर्ण जीवन पर आधारित एक अत्यंत मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी उपन्यास के

माध्यम से मृदुला सिंहा ने पौराणिक सीता कथा का पुनराख्यान किया है। सीता जिन अवस्थाओं में जीती थी उसका पुनराख्यान वर्तमान भारतीय परिवेश में आवश्यक और महत्वपूर्ण हो उठा है। इस आवश्यकता की पुष्टि करते हुए मृदुला सिंहा कहती है – "इस समझ के बावजूद मुझे सीता की कथा लिखना आवश्यक लगता था। इसलिए कि पुराणों, पुस्तकों, लोक-साहित्य, रामलीलाओं और सभागारों की हजारों गोष्ठियों में भी रामकथा के सोपानों पर सीता के मन को बहुत कम समझा गया है। सच तो यह है कि राम की सहधर्मिणी सीता परोक्ष और अपरोक्ष रूप से उनसे अभिन्न होकर भी भिन्न थीं। राम के साथ इस भिन्न और अभिन्न व्यक्तित्व को रामचरित-चित्रण में समाया नहीं जा सकता था। उसकी भिन्नता और अभिन्नता का आकलन अवश्य शेष रहा है। ऐतिहासिक भारतीय नारी की आत्मिक शक्ति और तदनुकूल आचरण का भी, जो आज साधारण नारियों का भी संबल और धरोहर है।"[1] यहाँ मृदुला सिन्हा पौराणिक पात्र सीता के माध्यम से एक साधारण भारतीय नारी को प्रस्तुत करती है। सामाजिक संबंधों में बंधी सीता के प्रतिरोध को यहाँ व्यक्त किया है। नारी अबला नहीं, उनमें जीने की, लड़ने की ताकत है, लेखिका ने इस विचार को प्रस्तुत किया। नारी शिक्षा, नारी संघर्ष और अधिकार पर अपने विचार को लेखिका सीता के माध्यम से प्रस्तुत करती है।

'सीता पुनि बोली' में हिंदू समाज में स्त्री-पुरुष दोनों के लिए आदर्श महिला को पारंपरिक रूप से सीता ने ही मानकीकृत किया। सीता माता के मन के भावों को लेखिका अपनी भाषा में शब्दबद्ध करती है। नारी की आत्मिक शक्ति के साथ मातृत्व की प्रतिष्ठा की गई है। भारतीय नारी की आचरणशीलता और पतिव्रता धर्म को सीता माँ के शक्ति संपन्न रूप के साथ संजोया गया है। सीता के अंर्तमन में उमड़ आई अनुत्तरित प्रश्नों को मृदुला सिन्हा ने लोकमन के साथ उठाया है। लेखिका मानती हैं कि बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों के हल सीता को शक्ति-संपन्ना नारी मानकर ही ढूँढे जा सकते हैं। स्वयं सीता की पीड़ा में लाखों नर-नारियों ने प्रवेश कर इन प्रश्नों का हल ढूँढा है। सीता की 'आत्मकथा' लिखकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए लेखिका कहती हैं - "सीता का 'आत्म' मात्र एक व्यक्ति का 'आत्म' नहीं रहा, सनातन समाज का 'आत्म' बना है। सीता की आत्मकथा लिखना कठिन तो था, असाध्य नहीं। व्यष्टि से समष्टि की ओर ले जाने का प्रयास ही था सीता मन को चाहना रामकथा के प्रवाह में और थामना।"[2] आज के संदर्भ में सीता के चरित्र को पठनीय और दर्शनीय बनाने के लिए मृदुला सिन्हा ने आत्मकथात्मक शैली को ही उपयुक्त समझा।

मृदुला सिन्हा ने भारतीय नारी की आत्मिक शक्ति को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। सीता जैसी मिथकीय नारी पात्र के माध्यम से साहित्य में नारी को एक सशक्त स्थान दिया है। स्त्री सशक्तिकरण का संदेश वह देती हैं कि बेटियों का विकास हो और वह विकास उन्हें बेटियाँ के रूप में स्वीकार कर ही होना है। अर्थात उनके मूल स्वरूप को सुरक्षित रखे। क्योंकि बेटियाँ बेटों के बराबर नहीं, विशेष है। ये विशेषताएँ उन्हें प्रकृति से मिली है। कुछ विशेष दायित्व संस्कृति से भी। हमारे समाज मे लिंग भेदभाव की जो समस्या है उसे मृदुला सिन्हा ने सीता के माध्यम से दर्शाया है। सीता को घुड़सवारी और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया गया था। सीता युद्ध में जाने को विशेष तत्पर है, लेकिन उन्हें माँ सुनयना रोक लेती है क्योंकि वह बेटी है। माँ कहती हैं - "तुम तो बेटी हो। तुम्हें घुड़सवारी सिखा दी, कुछ हथियारों का प्रशिक्षण दे दिया, इसका अर्थ यह नहीं कि तुम युद्ध क्षेत्र में जाओगी और अभी ऐसी स्थिति नहीं आई है।"[3] अपने को सौ बेटों के समान मानने वाली सीता माँ से

बेटे और बेटी के अंतर पर सवाल करती है तो माँ का तर्क कुछ इस प्रकार है – "यह तो कहने की बात है। बेटी और बेटे में अंतर तो है ही । तुम्हें किसी राजकुमार के साथ ब्याहकर जनकपुर से बाहर जाना है। बेटा होता तो यहाँ का राज भोगता।"[4] माँ सीता को समझाती है कि स्त्री धन है, संपत्ति है, और किसी की धरोहर है। यह मानसिकता हमारे समाज में आज भी है। हर माँ अपनी बेटी को यही सीख देती है कि लड़कियाँ परायी धन है।

पारिवारिक जीवन के कई पारंपरिक रीति –रिवाजों पर मृदुला सिन्हा सीता के माध्यम से स्पष्टीकरण देती हैं। बेटी से बहु बनते वक्त स्त्री को दो भूमिकाएँ निभानी होती है, एक भूमिका में वह लाड़-दुलार और सम्मान पाती है। दूसरी भूमिका में सेवा और विनम्रता से ही स्त्री सफलता हासिल करती है। सीता को यह सीख भी उसकी माँ देती है। विवाह के बाद ससुराल में भी उसे माँ समान सास मिलती है जो दांपत्य में स्त्री और पुरुष के बराबर भागीदारी पर अपने बेटे और बहु को यह सीख देती है – "विवाह-बंधन में तुम दोनों बंध चुके हो। पूरा जीवन दुःख और सुख में साथ निभाने का संकल्प लेना है, दो शरीर एक प्राण हो जाना है। सीता तुम्हारे प्रति अपने प्रेम के बल पर सम्मान अर्जित करेगी। पत्नी पति के बराबर नहीं होती, वह सम्माननीय होती है। इसलिए इसके मनोभाव का अनादर कभी मत करना।"[5] सीता ने हर सीख को अपनी बुद्धि रुपी कसौटी पर कसकर ग्राह्य होने पर ही ग्रहण किया।

वनगमन के वक्त सब लोग सीता को रोकते है क्योंकि वह नारी है। पुरुष के समान वन में चौदह साल बिताने को वह अशक्त है। कठिन परिस्थितियों को सहने की मजबूती नारी में नहीं है। लोकचित्त में स्थित सीता अबला नहीं है, उनमें बड़ा तेज है, आत्मगौरव है। राम के वनवास में सीता तापस वेष धारण करने का संकल्प दृढ़ता से प्रस्तुत करते हुए कहती है - "हाँ, अभी आपका राज्याभिषक होने वाला था। पिताजी ने मुझे रानी बनाने की घोषणा नहीं की थी, फिर भी मुझे रानी के रूप में सजाया जा रहा था। मुझे आपके साथ राज्याभिषेक के समय उचित आसन पर बैठना था। किन्तु आप जब तापस वेश धारण करेंगे तो क्या मैं रानी वेश में सजूँगी। मैं भी तापस वेष में ही वन जाऊँगी।"[6] आत्म-निर्णय सीता के चरित्र की ऐसी विशेषता है जो सीता के आत्माभिमान के शौर्य के साथ प्रदीप्त है। सीता वन गमन को भी अपने जीवन का उत्सव मानती है। सीता भारतीय नारी की आदर्श है। मिथिला के राजा जनक की पुत्री होते हुए भी राजमहल का सुख छोड़ पत्नी धर्म का पालन कर उन्होंने पति के साथ वनवास जाना स्वीकार किया। सीता का आदर्श दुनिया के लिए अनूठा है। मिथिला की पहचान सीता से है। वहाँ की संस्कृति का आधार ही सीता है। सीता का जीवन आधुनिक परिवेश में भी अनुकरणीय है। पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए उन्होंने राजमहल के ऐश्वर्य को त्यागकर वन में संघर्षशील जीवन बिताया।

अग्निपरीक्षा प्रसंग इस युग या समाज की स्थिति का परिचायक है। यह प्रसंग उस युग में नारियों के अपहरण और अपहृत नारी की स्थिति को उजागर करता है। राम-रावण के बीच हुए युद्ध के उपरांत राम सीता की अग्निपरीक्षा लेते है। इसके प्रति सीता के मन में अनेक सवाल उभरते है - "मैं नहीं दूँगी अग्निपरीक्षा। मैं राम के बिना लंका में अकेली रही तो राम भी तो मेरे बिना अकेले रहे? फिर मेरी ही क्यों होगी अग्निपरीक्षा? क्या मात्र इसलिए कि मैं स्त्री हूँ? मात्र इसलिए वह पुरुष की सारे अनाचार सहे? नही, मैं नहीं दूँगी अग्निपरीक्षा?"[7] अपनी पवित्रता के प्रमाणस्वरूप सीता अग्नि में प्रविष्ट होती है। यह सीता के जीवन का सर्वाधिक करुण प्रसंग है।

श्रीराम एकपत्नीव्रत का अनुष्ठान करते है। सीता अपनी आंतरिक शक्ति से सभी कठिन परिस्थितियों को बदलती है। श्रीराम द्वारा मिला **अग्निपरीक्षा** का वह मन से प्रतिरोध करती है लेकिन दोबारा राम को पाने के लिए अग्नि पर चल देती है । वह मन ही मन **स्त्री** होने के अवसाद को कोसती है। उनके दांपत्य जीवन में वह पहली गाँठ थी जिसका उत्तर जीवन भर उन्हें **नहीं** मिला। सीता के अग्निपरीक्षा पर हनुमान के राम से पूछने पर वह राम विनोद भरे तर्क देते है कि **अग्निपरीक्षा** जनसमुदाय के लिए थी, मेरे लिए नहीं। लंका से लौटते हुए सीता रोगों के कीटाणु ले आई थी जो अग्नि में **प्रवेश** करने से जल गए । सीता का मन और सत तो **शुद्ध** था ही, अब शरीर भी शुद्धतम हो गया । त्रिजटा के पूछने पर सीता अपना तर्क यह देती है कि पूर्ण पुरुष के साथ सम होने के लिए नारी को भी पूर्णता चाहिए जो **कि** माँ बनने में है। सीता अपना स्वार्थ खुलकर व्यक्त करती है – "यह ऋण है मेरे ऊपर – माँ का ऋण, जिसे माँ बनकर ही उतारा जा सकता है। अग्निपरीक्षा देने जैसा मन के विपरीत निर्णय भी मैंने संभवतः अपने इसी कर्तव्य-पूर्ति भाव के कारण स्वीकार किया।"[8] अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिए अग्निपरीक्षा को सीता स्वीकार कर लेती है। राम के लिए भी अग्निपरीक्षा साध्य **नहीं**, साधन थी, राम द्वारा मर्यादा – स्थापना में एक और पग।

राजा राम द्वारा राजधर्म और लोकधर्म का पालन करते हुए सीता का **परित्याग** हुआ तब सीता ने अपने निर्वासन के बारे में लक्ष्मण से कहा – "देखते रहना, मेरे निर्वासन पर वे आँसू न बहाएँ। फिर तो मुझे बहुत पीड़ा होगी।"[9] अपने आत्मबल के शौर्य से उस स्थिति का भी वह सामना करती है। सीता का चरित्र इस उपन्यास में नारी के आत्मिक और चारित्रिक **शौर्य** को रेखांकित करते हुए भारतीय स्त्री के **आत्मबल** और स्वाभिमान को ऊँचाइया प्रदान करती है। **निर्वासन** दण्ड का एक रूप हो सकता है जो नारी के लिए बहुत कष्टदायी है। यहाँ गर्भवती सीता को निर्वासित करके राम अपने पत्नी से अत्याचार करते हैं। उन्हें अकेले वन में उपेक्षित कर गर्भवती सीता के साथ अन्याय होता है। अपने निर्वासन का कारण सीता को समझ नहीं आया और राम की निष्ठुरता पर विश्वास नहीं हुआ। **उन्होंने** अपने मनोबल से वास्तविकता का सामना **किया**। अपने अन्दर के क्रोध और दुःख भाव रुपी प्रज्वलित **अग्नि** में सीता का अंतर्मन झुलस रहा था। नारी जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के संकल्प ने सीता के व्याकुल मन को शीतलता प्रदान की और उस लक्ष्य के प्रति वह आसक्त हुई। गर्भ में पल रहे शिशुओं को राम से बढ़कर बनाना था यही उनके जीवन का लक्ष्य बना। लेकिन अपने बच्चे के जन्म की खबर श्रीराम को भेजना उन्हें मंजूर **नहीं**। राम के द्वारा पत्नी-निष्कासन का यह दंड सीता का प्रतिरोध ही था। वह आश्रमवासियों को अपना दृढ़ **निश्चय** सुनाती है – "मैं अकेले अपने बच्चे को वह सबकुछ दूँगी जो भरे-पूरे परिवार में एक दंपती देते हैं।"[10] सीता **शक्तिसंपन्न** नारी होने से अपने दो बच्चों लव-कुश का लालन पालन करके दोनों को वाल्मीकि आश्रम में विद्या **अभ्यस्त** कराती है। पुत्रों को अयोध्या के राजा बनने लायक बनाने का संकल्प सीता मनोयोग से पूरा करती है। पति के आदेशानुसार निर्वासन के दौरान वन में साधारण नारी की तरह रहते हुए उन्होंने एक माँ का कर्तव्य निभाते हुए उच्च आदर्श स्थापित किया। आज के समाज में उन आदर्शों का लोप होता जा रहा है।

गुरु वाल्मीकि हमेशा सीता से राम को 'क्षमा' करने को कहते थे। क्षमा कर सीता को वह उच्च आसन पर विराजमान होता देखना चाह रहे थे। लेकिन सीता का चिंतन एकदम स्पष्ट था कि राम को अपने निर्वासन

के लिए क्षमा कर उनके सामने बड़प्पन दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। अपने मातृत्व-साधना के पीछे राम को वे मानती है। सीता कहती है – "न मैं निर्वासित होती, न अकेले संतान-पालन का सुख मिलता। उनसे भिन्न होकर भी अपना अस्तित्व था। यह तो निर्वासन के कारण पता चला।"[11] राम द्वारा निर्वासित होने के बाद सीता बहुत विदीर्ण हुई, क्योंकि वह गर्भवती थी। लेकिन बच्चों के लिए अपनी दुःख को दूर करके स्वयं शक्ति संपन्न हो गई। मृदुला सिन्हा आदर्श व्यक्तित्व के रूप में सीता को प्रस्तुत करती है। असल में निर्वासन के बाद ही सीता इतनी शक्तिसंपन्न व्यक्तित्व हो गई। राम ने सीता के अभाव में रंक का जीवन जिया, सुख-संपदाओं के बीच भी विषादग्रस्त रहे हैं और यही सीता को निर्वासन देने की सजा है। अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर लव-कुश का पिता श्रीराम से समागम हुआ, लेकिन सब लोग राम-सीता का पुनः समागम चाहते है। राम को पत्नी-निर्वासन के कलंक से मुक्त करने के लिए सीता को अयोध्या बुलाया गया।

इस उपन्यास में एक शक्ति स्वरूप सीता को हम देख सकते है। सीता पर कितने ही दबाव होते है पर वह स्वयं प्रतिरोध करके जीवन बिताती है। सीता अपनी अस्मिता को महत्व देती है, इसलिए वह अपने सभी कर्मों को पूरा करके पृथ्वी में लीन होना चाहती है। नारी अपनी पति की अनुपस्थिति में कठिन परिस्थितियों का सामना करती है और सकारात्मक बनती है। देवी पार्वती के आशीर्वाद से सीता की सभी मनोकामनाएँ पूरी हुई- राम द्वारा धनुष-भंग, राम के साथ वन-गमन, राम का स्वर्ण मृग के पीछे भागना, रावण वध, सीता का गर्भवती होना, तपोवन जाना, बच्चों को संस्कारित करना और पुनः पुत्रों को राम को सौंपना। सीता के वे अंतिम वाक्य पाठक को रोमांचित करने के साथ साथ हृदयविदारक पीड़ा प्रदान करती है – "मैं पृथ्वी-पुत्री सीता इन दोनों पुत्रों की जननी हूँ। इक्ष्वाकु वंश की ये दोनों संतानें उनके प्रतापी वंश को अर्पित कर मैंने अपना दायित्व पूर्ण किया। ..चलते चलते बहुत थक चुकी हूँ। पुनः शक्ति –प्राप्ति के लिए धरती ही उपयुक्त स्त्रोत है। मैं कुश एवं लव की जननी और पालनकर्त अब अपनी जननी का आलिंगन करना चाहती हूँ, उसके सत में विलीन हो जाना चाहती हूँ।"[12] सीता एक नारी के सभी कर्तव्यों की पूर्ति के बाद ही मुक्ति पाने के लिए पृथ्वी में लीन हो जाती है।

इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने नारी सशक्तिकरण का संदर्भ दिया है। स्त्री शक्ति का प्रतीक है और उसने अदम्य साहस का परिचय भी दिया है। इसके अतिरिक्त धैर्य एवं त्याग का। नारी को पृथ्वी की संज्ञा दी गयी है। वास्तव में दमन का विरोध और प्रगतिशील नवीन विचारों को अपनाना ही नारी का आधुनिक होना है। पृथ्वी पुत्री सीता भारतीय समाज के लिए त्यागमयी, सति-सावित्री नारी है। वह एक साधारण नारी के परे शक्तिसंपन्न, निर्भय व्यक्तित्व है। इसलिए नारी की तुलना सीता से करते है। वह सभी गुणों से संपन्न है। पुत्री, पत्नी, गृहस्थी, माता आदि में वह आदर्शोन्मुख व्यक्तित्व है। वह अपने पति के सुख-दुःख में उनका साथ देती है। श्रीराम को चौदह साल का वनवास मिलते समय सीता भी राजमहल के सभी सुख सुविधाओं की उपेक्षा कर पति के साथ वनगमन स्वीकार करती है। रावण सीता का हरण करके अपनी पत्नी बनाना चाहते है, लेकिन सीता लंका की सुविधाओं में न डूबते हुए अपने पति पर विश्वास करती है। राम और सीता के माध्यम से लेखिका भारतीय आदर्श नारी को प्रस्तुत करती है। उनकी सीता का एक ही वैशिष्ट्य है कि वह राममयी है। उनकी एकनिष्ठता ही उनकी शक्ति है जो भारतीय नारियों को सनातन आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

नारियोचित शक्ति और दुर्बलताएँ होने के साथ ही सीता में सर्वाभिमान भी है जो इनकी एकनिष्ठता से उपजा है । सीता स्वयं अपनी इच्छाशक्ति से वनवास, निर्वासन सभी समस्याओं का शक्तिपूर्व प्रतिरोध करती है। सीता आज की नारी के लिए प्रेरणादायक है। आधुनिक नारी के संदर्भ में भी सीता को उच्चस्थान देते है और लोकमानस में आदर्श नारी के रूप में वह बसती है।

मृदुला सिन्हा अपने साथ हुए सारे अन्याय के प्रति विद्रोह करती जी रही एक साधारण नारी के रूप में सीता को चित्रित करती है। बेटी, बहन, पत्नी, पुत्रवधू, माँ के रूप में परिवर्तित करती हुई सीता के जीवन के विभिन्न अवस्थाओं को प्रस्तुत करते है। परित्यक्त सीता सहानुभूति की पात्र है। इस प्रकार में लोकमानस में राम-सीता सम स्थान पर विराजमान हो जाते है। राम के बिना आश्रम में रहकर कुश और लव का पालन-पोषण उन्हें योग्य युवराज बनाने के संस्कार देने के कारण वनवासिनी सीता लोक हृदय में राम से ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेती है।

मृदुला सिन्हा ने पौराणिक नारी को मुख्यपात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। सीता का जीवन भारतीय नारियों में श्रेष्ठ जीवन है। वह प्रतिकूल परिस्थितियों को बदलते हुए जीती है, एक सशक्त नारी के रूप में सीता का शौर्य और उनकी आत्मिक शक्ति आज की महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है। मृदुला सिन्हा की सीता जिन अवस्थाओं में जीती थी उसका पुनराख्यान वर्तमान भारतीय परिवेश में आवश्यक और महत्वपूर्ण हो उठा है। पुराण काल में स्त्री पर हुए अत्याचार को सीता के माध्यम से मृदुला सिन्हा ने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। मृदुला सिन्हा, स्वयं सीता बनकर, सीता के मन के भावों को यहाँ प्रस्तुत करती हैं। भूमिका में लेखकीय संतुष्टि को बयान करती वे कहती हैं – "मेरे लेखकीय मानस को इस रचना से बहुत संतोष और सुख मिला है। हृदय में स्थापित सीता-चरित को मस्तिष्कीय टकसाल पर भी ढाला है। विश्व-इतिहास के सर्वोत्तम और सर्व शक्तिमान नारी के साथ-साथ चलना, उनकी स्मृतियों में डूबना-उतराना स्वर्गिक सुख तो था ही।"[13] मृदुला सिन्हा अपने इस उपन्यास के माध्यम से महिलाओं के उत्थान को महत्व देती है। 'सीता पुनि बोली' में शक्ति-संपन्ना एवं स्वाभिमानी सीता के प्रतिरोध के विभिन्न तेवर पाठक को आधुनिक सन्दर्भ में सोचने को मजबूर अवश्य करता है।

संदर्भ सूची

1 . मृदुला सिन्हा, सीता पुनि बोली, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2016, पृ.सं – 8

2. वही, पृ.सं - 9

3. वही, पृ.सं – 29

4. वही, पृ.सं – 29-30

5. वही, पृ.सं – 62

6 . वही, पृ.सं – 83

7. वही, पृ.सं – 190

8. वही, पृ.सं – 194

9. वही, पृ.सं – 226

10. वही, पृ.सं – 238

11. वही, पृ.सं – 275

12. वही, पृ.सं – 293

13. वही, पृ.सं – 12